Time to Remember... Place to Repay

pitrapaksha

GAYA

गया परिदर्शन

जिला प्रशासन, गया

धम्मं शरणं गच्छमि।।

संघं शरणं गच्छमि।।।

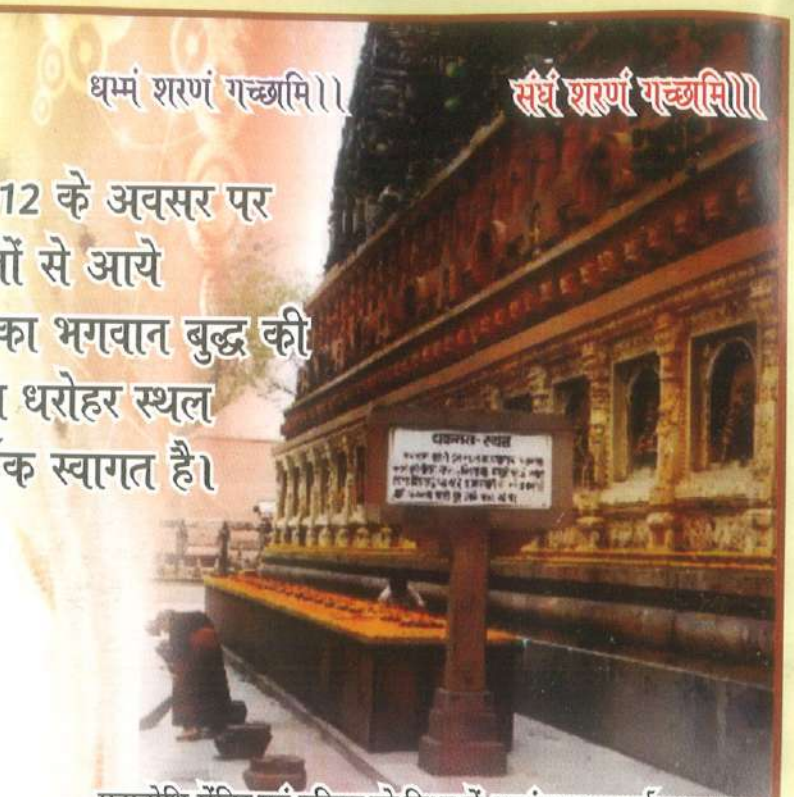

12 के अवसर पर
ों से आये
का भगवान बुद्ध की
धरोहर स्थल
क स्वागत है।

महाबोधि मेंदिर एवं परिसर पूरे विश्व में अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थल माना जाता है। यही वह स्थल है जहाँ छठी शताब्दी ई.पू. गौतम सिद्धार्थ को सर्वोच्च सम्बोधि की प्राप्ति हुई और वे बुद्ध कहलाए।

इस वचित्रतम तीर्थस्थल की उन्नति, सुरक्षा एवं इसके संरक्षण तथा सौन्दर्यकरण के लिए आपका सहयोग अपेक्षित है। इस महाबोधि स्थल पर आप का शुभागमन चिरस्मरणीय हो, ऐसी हमारी शुभकामना है। भवंतु सर्व मंगलो।

नान्जे दोरजी
भा.प्र.से. (से.नि.)
सदस्य सचिव
बी.टी.एम.सी.

बन्दना प्रेयषी
भा.प्र.से.
जिलाधिकारी, गया
सह-अध्यक्ष, बी.टी.एम.सी.

सदस्य

भदन्त आर्य नागार्जुन
भदन्त ज्ञानेश्वर महाथेरा
महंथ श्री सुदर्शन गिरी
डा. (श्रीमती) महाश्वेता देवी
डा. (श्रीमती) कुमुद वर्मा
डा. राधाकृष्ण मिश्र
डा. अरविन्द कुमार सिंह

अधिक जानकारी के लिए कृपया लॉग-ऑन करें :
www.mahabodhi.com
दू० : 0091-631-2200735 फैक्स : 2200777
ई-मेल : mahabodhi@hotmail.com

प्रेम कुमार

मंत्री
नगर विकास एवं आवास विभाग
बिहार, पटना

बिहार सरकार

प्राक्कथन

पितृपक्ष मेला-2012 के अवसर पर जिला प्रशासन लघु पुस्तिका का प्रकाशन किया जा रहा है। इसमें गया शहर संक्षिप्त विवरण है।

ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक दृष्टिकोण से ग जहाँ भगवान विष्णु के चरण में देश-विदेश से लाखों हिन्दू श्र आत्मा की शांति एवं मोक्ष की कामना से श्राद्ध-तर्पण करते हैं स्थली बोधगया में विश्व के कोने-कोने से बौद्ध धर्मावलम्बी लिए भी गया एक पवित्र स्थल है।

गया शहर का मूल निवासी होने के कारण मैं भी कालखण्ड का साक्षी हूँ। अनेक उतार-चढ़ाव के बीच गया नि अग्रसर है। विभिन्न धर्मों एवं सम्प्रदायों की अनेक गतिविधि निरंतर कायम है, जो गया की मौलिक विशेषता है। अपनी सामाजिक समरसता एवं आपसी मेलजोल रखना हमारा परम क

प्रारंभिक काल से ही राजनीतिक-सांस्कृतिक केन्द्र आसपास के क्षेत्रों में हमारी सभ्यता एवं संस्कृति के अवशेष य स्थल पुरातात्विक, धार्मिक एवं पर्यटन के दृष्टिकोण से अत्यन्त म पुस्तक में संकलित है, जो सराहनीय है। आशा है, इससे अधिकाधि

शुभकामनाओं सहित।

ा शृंगार विभूषित पूज्य-चरण

प्रस्तावना

इस वर्ष पितृपक्ष मेल
'गया परिदर्शन' प्रकाशित की जा
है। इसमें गया जिला के महत्वपूर्ण
संकलित है।

ऐतिहासिक, पौराणि
दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण ग
एक विशिष्ट स्थान है। मोक्षधा
दुनिया से लोग अपने-अपने पितरों की आत्मा की चिर
आते हैं। यहाँ के विष्णुपद मंदिर में भगवान विष्णु का
बोधिवृक्ष के नीचे भगवान बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति ह
अहिंसा, करुणा और दया का संदेश दिया। विश्व के को
यहाँ प्रतिवर्ष आकर भगवान बुद्ध को नमन करते हैं।

गया सिर्फ बौद्ध एवं सनातन धर्मावलंबियों का
धर्म माननेवालों के लिए भी पवित्र तीर्थस्थल है। यहाँ अ
के लिए सरकार सचेष्ट है। गया जिले के विभिन्न स्थलो
तत्कालीन सभ्यता एवं संस्कृति की जानकारी मिलती
अत्यंत समृद्ध एवं गौरवशाली विरासत की रक्षा करें।
आतिथ्य भाव रखते हुए उनके सुख-सुविधा का ध्यान र
सतत् प्रयत्नशील है।

'गया परिदर्शन' का प्रकाशन गया एवं जिले
एकीकृत रूप से अवगत कराने का हमारा लघु प्रयास है
महानुभावों के प्रति मैं आभारी हूँ। आशा है, यह पुस्तक स

अनंत मंगलकामनाओं सहित।

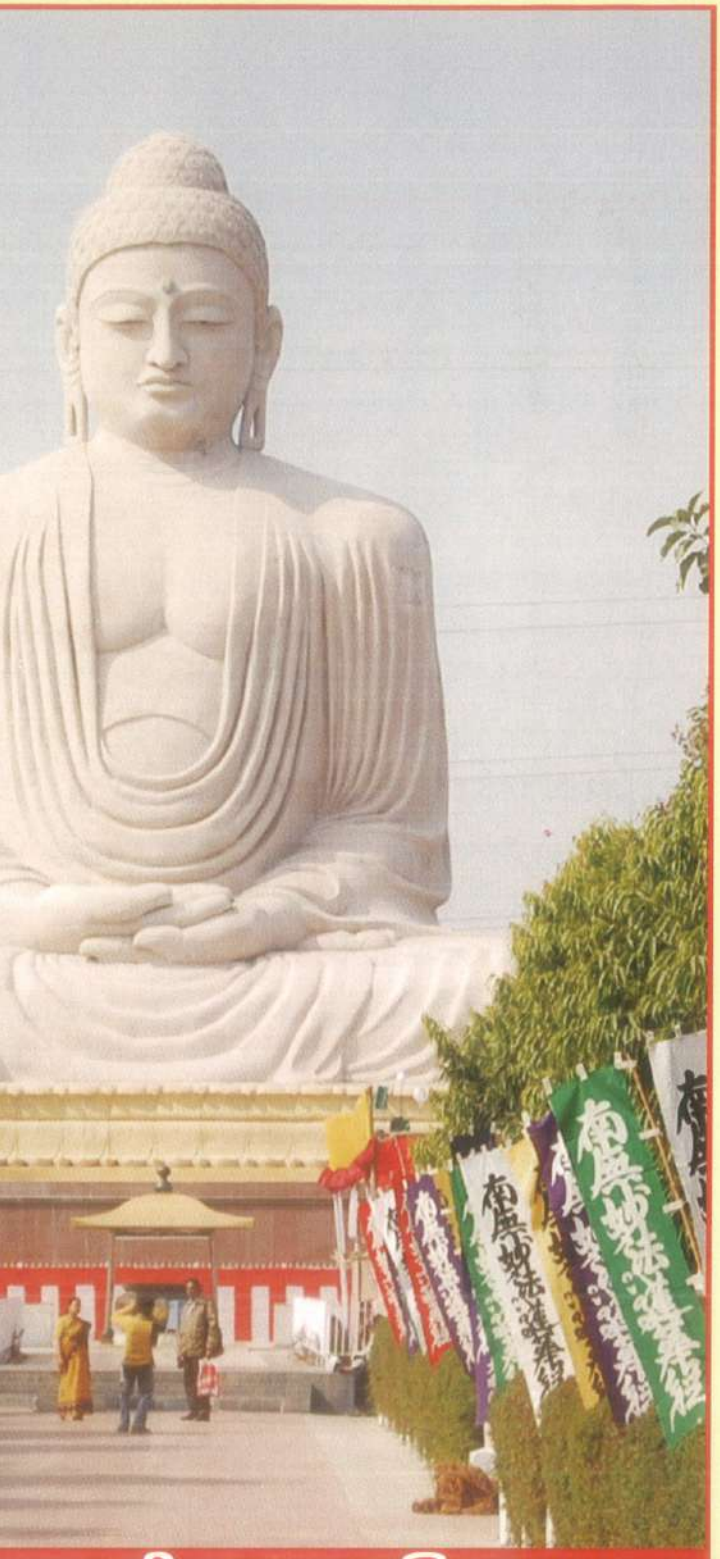

बुद्ध की 80 फुट प्रतिमा

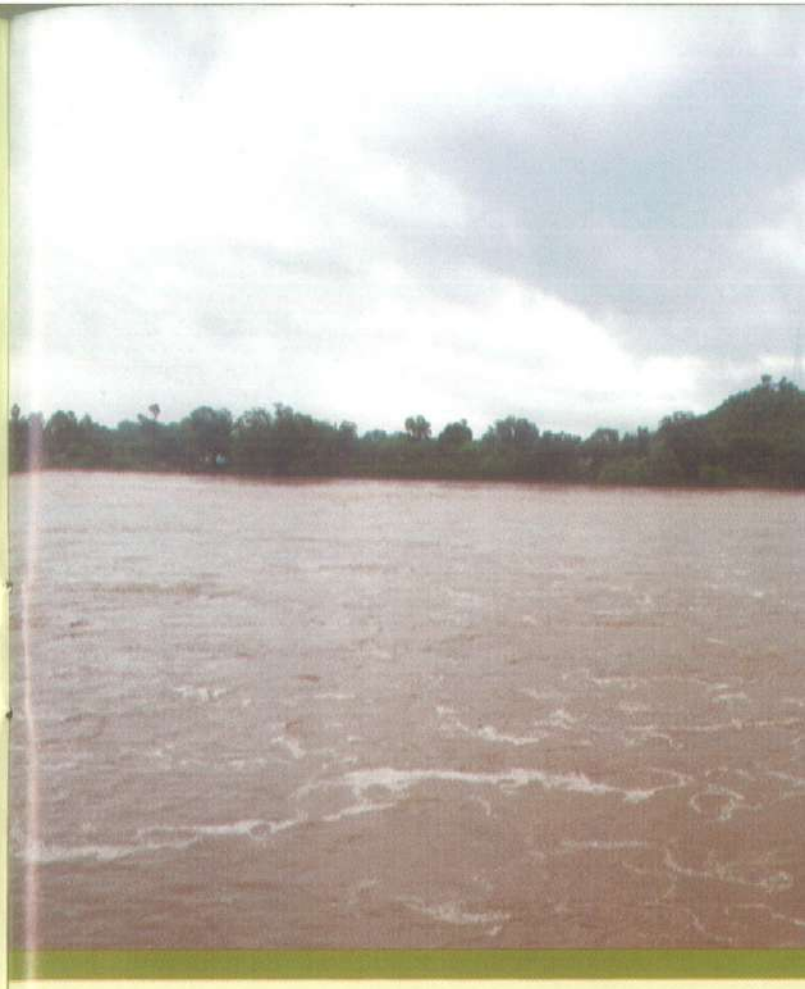

गया परिदर्शन

मगध प्रदेश की सांस्कृतिक राजधानी के रूप में
इतिहास ग्रंथों में वर्णित है। इसकी प्राचीनता का उल्लेख क

अंत:सलिला फल्गु नदी के पश्चिमी कछार प
विभिन्न संस्कृतियों व धर्मों का जाग्रत केन्द्र रहा है। वायु
सभी परिचित हैं, जिसके नाम पर इस नगर का नाम गया प
यज्ञ के लिए समर्पित कर दिया। स्वयं भगवान विष्णु ने ग
किया।

गया महात्म्य के अनुसार गया का नाम ब्रह्मगया
'आलमगीरपुर' पड़ा। आधुनिक गया इस समय स्पष्ट तौर
और आधुनिक गया। प्राचीन गया को अन्दरगया के नाम

साहेबगंज' कहा जाता था। अद्यावधि में यहाँ भारत ही नहीं
े लाखों हिन्दू धर्मावलम्बी 'पितृपक्ष' में अपनें पितरों को मोक्ष
एवं तर्पण आदि करने गया आते हैं। विष्णुपद मंदिर के गर्भगृह
उत्कीर्ण हैं। यहाँ प्राचीन काल में 365 पिंडवेदियां थीं जहाँ
मात्र 54 पिंडवेदियां ही बची हैं जिनपर पिंडदान किया जाता

कृतिक एवं ऐतिहासिक विरासत अत्यंत महत्वपूर्ण है। यहाँ
स्तर, मृण्मूर्ति व कांस्यमूर्ति, पुरावशेषों, गुफाओं आदि सहित
बी फेहरिस्त है। इनका साक्षात्कार करने के लिए बोधगया,
च इत्यादि अनेक स्थलों का भ्रमण किया जा सकता है। इन
कार है –

विष्णुपद मंदि

गयाधाम में अति प्राचीन विष्णुपद मंदिर को
धरोहर कहा जाये तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। मह
यात्रा के क्रम में विष्णुपद मंदिर का जीर्णोद्धार 1786 ई
छोटे आकार में था जिसे महारानी ने भव्यता प्रदान की। प
गये काले ग्रेनाईट पत्थरों से निर्मित श्री विष्णुपद मंदिर स्थ
किया है जयपुर के कलाकारों ने। मंदिर के गर्भगृह में भ
देश-विदेश के श्रद्धालु मत्था टेकने आते हैं। गर्भगृह व
स्थापित है, जिनके नाम से गया ख्यात है। यहीं पास में
यात्री अपने पितरों के मोक्ष की कामना से गया में आकर
विष्णुपद मंदिर की भव्यता निराली है। इसके शीर्ष पर सो
उपस्थिति का एहसास कराता है।

महाबोधि मंदिर

बोधगया स्थित महाबोधि महाविहार का एक निजी आकर्षण के स्थापत्य व निर्माण की गाथा विवादास्पद है। इस तथ्य के लब्ध हुआ है। इसलिए इसके निर्माण व निर्माता का उल्लेख ान की प्रारंभिक सूचना ह्वेनसांग आदि यात्रियों के वृत्तांतों से मंदिर के धरातल की मरम्मत के क्रम में पश्चिमी तथा दक्षिणी हुई हैं, जो अशोककालीन है। मूल बोधिवृक्ष नष्ट हो चुका है के वेदिका स्तंभ पर अंकित हैं। बोधिवृक्ष के पास वज्रासन स्या की थी। वृक्ष के दोनों ओर छोटे स्तंभों के ऊपर धर्मचक्र र्तमान मंदिर के ऊपर वर्णित आकृति से भिन्न है। बोधगया से ी यह ज्ञात होता है कि इसका निर्माण गुप्त संवत 269 अर्थात गा।

गाँधी मंडप

दिल्ली के राजघाट, पोरबंदर और साबरमती के स्थान है जहाँ राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का कुछ अस्थि-भ गाँधीजी की हत्या के उपरांत उनका कुछ अस्थि-भस्म ग फल्गु नदी में प्रवाहित किया गया तथा शेष को उस स्थान विद्यमान है। इसके ठीक बीचों-बीच बापू के शव का भ को देश के प्रथम प्रधानमंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू ने ग किया।

सुप्रसिद्ध शिल्पकार उपेन्द्र महारथी की देखरे निर्माण हुआ जो हिन्दु तथा बौद्ध वास्तुकला का उत्कृष्ट न ऊँचा है तथा पूरा स्मारक क्षेत्र 1.78 एकड़ भूमि में फैला माथुर समाकक्ष भी है जो सामाजिक और राजनीतिक चेत

बागेश्वरी मंदिर

वे स्टेशन से 2 किमी. उत्तर बागेश्वरी रेलवे गुमटी के उस पार
बागेश्वरी मंदिर गण्य है। इसका निर्माण बुधौली स्टेट के द्वारा
के साथ-साथ मंदिर प्रागंण में भैरव जी, माँ काली, बजरंगवली
की जाती है।

लबगीचा देवी स्थान

से 03 कि०मी० उत्तर गोल बगीचा में देवी स्थान स्थापित है।
में गोलबगीचा का यह देवी स्थान अपनी यश:शक्ति के कारण
का नवश्रृंगार किया गया है, जिससे इसके रूप में काफी निखार

प्रेतशिला

गया रेलवे स्टेशन से 8 कि०मी० पश्चिम प्रेतशि
एवं गया तीर्थ के प्राचीन पिंडवेदियों में गण्य प्रेतशिला पव
इस पर्वत के नीचे में ब्रह्मकुण्ड है। गया तीर्थ के उत्तर में
स्थान पर की जाती है।

तपोवन

तपोवन मोहडा प्रखंड मुख्यालय से 4 कि०मी०
लाइन के किनारे है। वजीरगंज या राजगीर से यहाँ जाना
लिए प्रसिद्ध तपोवन में गरम पानी के चार कुण्ड हैं, जो ब्र
सनातन और सनत कुमार के नाम पर हैं। यहाँ कपिलेश्व
मकर संक्रांति व तीन वर्ष पर मलमास के समय यहाँ विशा

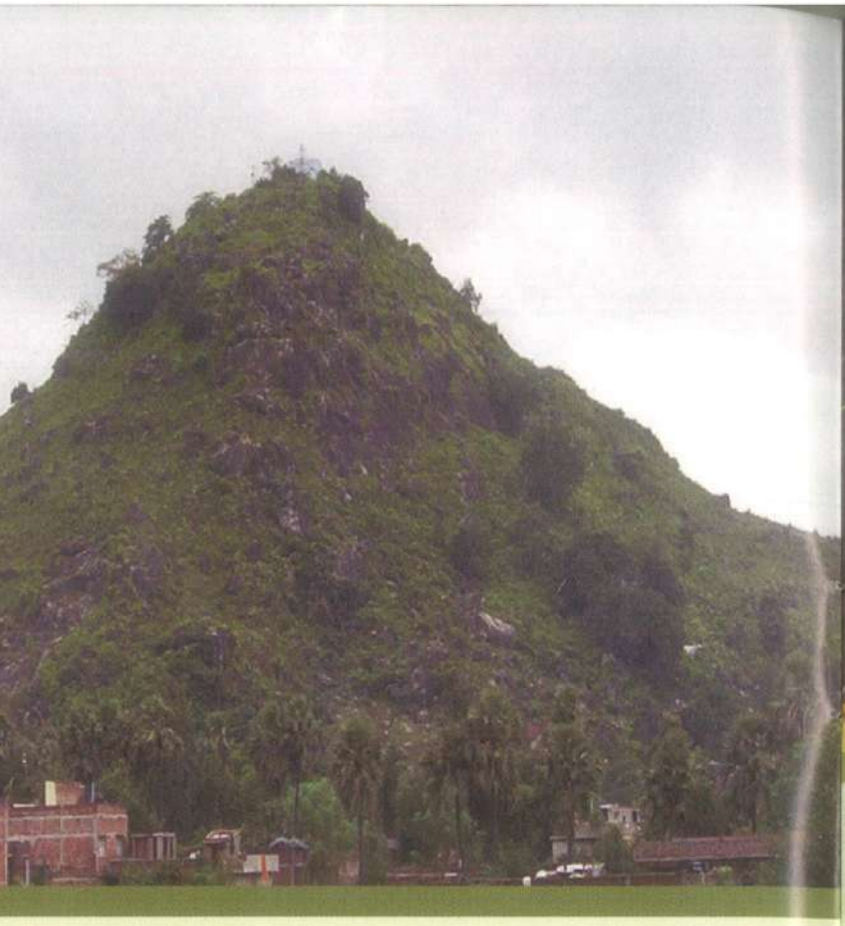

ब्रह्मयोनि

कि०मी० पर दक्षिण की तरफ यह ब्रह्मयोनि पहाड़ अवस्थित
एक ब्रह्मयोनि की महत्ता युगपिता ब्रह्मा जी के कारण है जिसे
स्थली बताया जाता है। इस पर्वत के ऊपर 'मातृयोनि' और
क गुफा है। यहीं पर पंचमुखी गायत्री मंदिर, शिवमंदिर व
खा जा सकता है। इस पर्वत के नीचे प्राचीन मंदिर और तालाब

नसेर

मुख्यालय से 3 कि०मी० की दूरी पर दक्षिण नहर के किनारे
कोल राजाओं का यहाँ प्रशासनिक केन्द्र था, जो आज नसेर
ावान बुद्ध का आगमन हुआ। गाँव के बाहरी भाग में अवस्थित
तथा अन्य पुरावशेष एवं गढ़ क्षेत्र में विराजमान तथागत की मूर्ति
इस तथ्य के गवाह हैं कि नसेर कभी मूर्त्त-शिल्प सम्पन्न गाँव था।

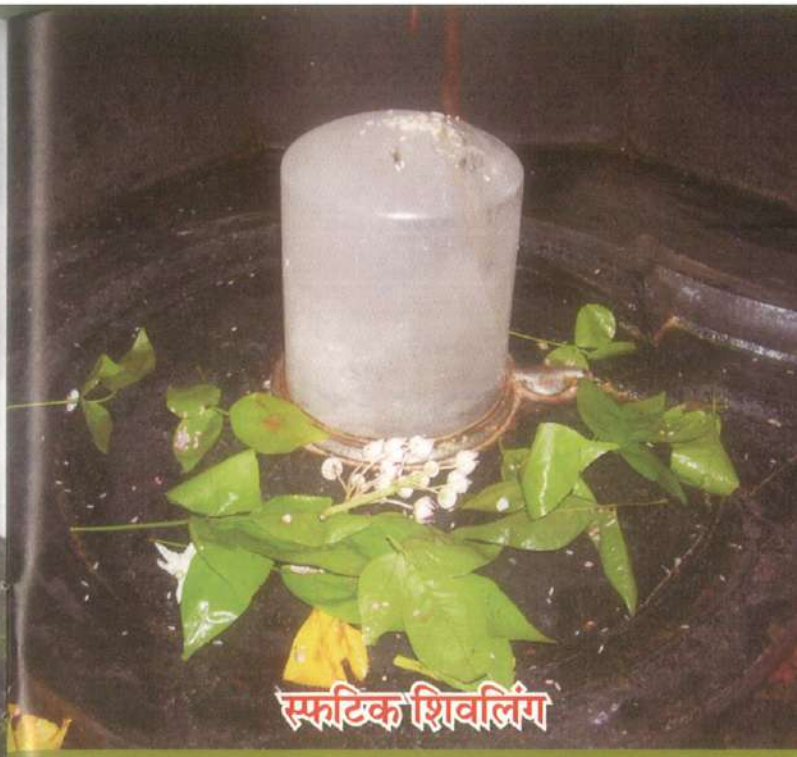

स्फटिक शिवलिंग

रामशिला

गया रेलवे स्टेशन से 2 कि०मी० पूरब रामशिला
तीर्थ के ऐतिहासिक पर्वत रामशिला पहाड़ के ऊपर पाता
इस पर्वत के नीचे की ठाकुरबाड़ी में मूँगा के गणेश और
देश-विदेश में प्रसिद्ध है। इसी ठाकुरबाड़ी के सामने
पिंडवेदियों में से एक है।

धोबनी पहाड़

धोबनी पहाड़ प्रखण्ड मुख्यालय इमाम
इमामगंज-डुमरिया पथ पर देवजरा गाँव से 1 कि०मी०
पहाड़ प्राचीन काल से बौद्धों का स्थल रहा है, जहाँ पहाड़
विशाल प्रतिमा थी, जो बाद में स्थानीय लोगों द्वारा सुरक्ष
दिया गया। बुद्ध से जुड़ा होने के कारण यह बोधनी पहाड़
जाता था, जिसे अब विकृत रूप में लोग धोबनी पहाड़ क
की दूरी पर प्राकृतिक जल स्रोत है, जो सालोंभर बहता हैं।
है। यहाँ का पानी दूधिया रंग का है।

सुजातागढ़

हाबोधि मंदिर से 1 मि०मी० पूरब निरंजना नदी के तट पर विभाग द्वारा संरक्षित ईटों का यह विशाल स्तूप सुजातागढ़ के कृषकमति कन्या सुजाता का विशाल घर था।

सोईया धाम

खंड मुख्यालय से लगभग 12 कि०मी० दूर दक्षिण-पूरब दक्षिण 4 कि०मी० पर अवस्थित है। यह डुमरिया के बिसनपुर के नीचे अवस्थित है। यहाँ प्रकृति प्रदत्त जल स्रोत है, जहाँ में दो बार 14 जनवरी (मकर संक्रांति) एवं 14 अप्रैल (मेष पर ग्रामीण मेला प्राचीन काल से लगता आ रहा है। इस ाला में मिलता है, जिससे आसपास सिंचाई का काम होता है।

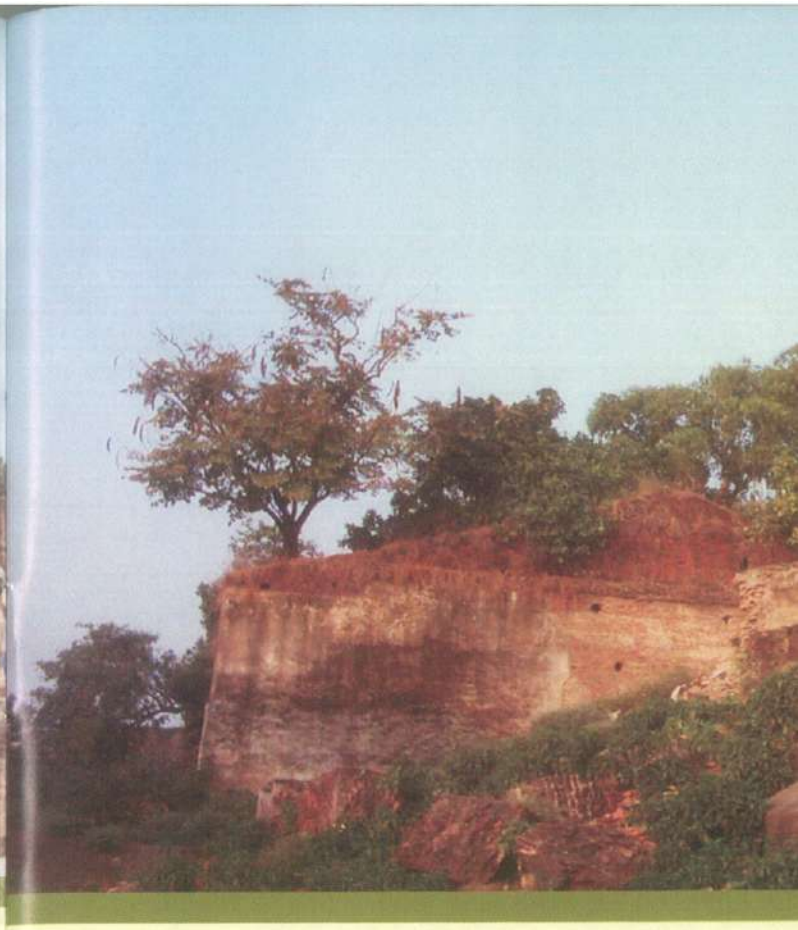

टिकारी किल

प्रखण्ड मुख्यालय से 1 कि०मी० दूरी पर अ राजवंश का प्रधान राजप्रासाद है जो बावन आँगन वाल प्रसिद्ध रहा। राजा राजवाड़ों की धरती मगध के ख्यातन का यह किला अब काफी कुछ गिर जाने पर नाम व शानों-शौकत, हवेलियाँ, अट्टालिकाएँ, रंगभवन, दरबार घर, रंगमहल, जादूघर, श्रृंगार घर, तालाब आदि की रौ लगभग तीन सौ साल तक स्वर्णिम स्थिति को समेटे हि विशेष महत्व रखता है।

कौआ डोल

प्राचीन भारतीय संस्कृति का यह मनोरम पर्वत बेलागंज प्रखंड मुख्यालय से 4 कि०मी० पूर्व तथा बराबर पर्वत से 1 कि०मी० दक्षिण में है। गया जिला के पुरातन पहाड़ियों में गण्य इस स्थान को रामायण कालीन काक भुसुण्डी से जोड़ा जाता है। बराबर के पास की यह पहाड़ी एक स्तूप की भाँति है, जिसकी ऊँचाई लगभग 600-700 फीट है। पूरी पहाड़ी काले और कड़ी ग्रेनाइट चट्टान की है, जिसका एक शिखर भाग ध्वज दण्ड की तरह खड़ा है। यह , फलतः इसका नाम कौआ-डोल पड़ा। इस पर्वत के चारों । इस पर्वत के शिलाखंडों में हिन्दू, बौद्ध व जैन देवविग्रह का

० उत्तर पूर्व पर अवस्थित ीन हड़ाही पोखर से 1 वर्ष के बौद्ध पुरास्थलों में एक कुर्किहार से हुए उत्खनन में धातु, पाषाण व चमकदार ग्रेनाईट पत्थर की बहुत सारी मूर्तियाँ मिली है, जो आज देश-विदेश के विभिन्न संग्रहालयों की शोभा बढ़ा रही है। कुर्किहार में भगवान बुद्ध का भी आगमन व धर्म प्रवचन हुआ। आज भी यहाँ माता बागेश्वरी मंदिर व तथागत के विविध मूर्तियों के खण्ड और अवशेष देखे जा सकते हैं।

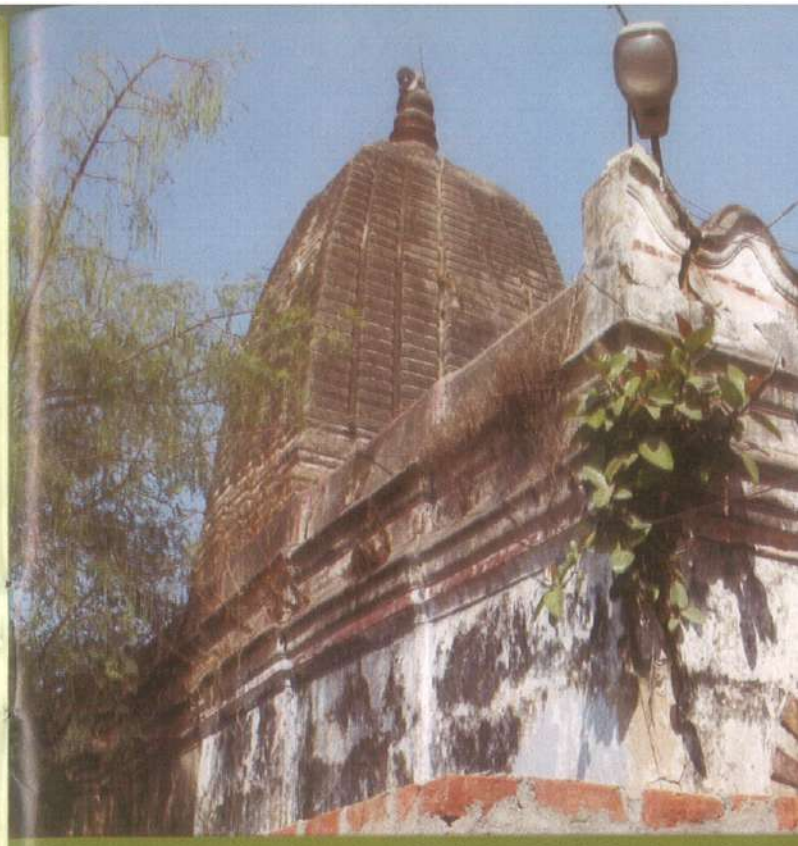

जनार्दन मंदि

गया जिला मुख्यालय से 2 कि०मी० दक्षिण श्री ऊपरी छोर पर यह मंदिर विराजमान है। गया तीर्थ में स्व० चर्चित इस स्थल में प्रभु-जनार्दन (अविमुक्तेश्वर नाथ) जिसका कोई नहीं वे यहीं अपना श्राद्ध संस्कार सम्पन्न क गया में गुप्तकालीन मंदिर का विशिष्ट उदाहरण है, जह ऐसे ही रखे पड़े हैं।

चित्रगुप्त मंदि

यह मंदिर गया के संक्रामक रोग अस्पताल के गया-बोधगया पुराने मार्ग पर गोदावरी क्षेत्र में स्थित है केन्दों में एक 'श्री काशी-खंड' में अवस्थित इस क्षेत्र आज भी पंचमुखी महादेव मंदिर, श्री गिरिधेश्वर म ब्रह्मस्थान, पीपल वृक्ष, देवस्थान 1931 में निर्मित चित्रगु है। पूरे गया जिला का सबसे पुराना चित्रगुप्त मंदिर यही है

ढुंगेश्वरी

ण्ड मुख्यालय से लगभग 7 कि०मी० पूरब दिशा में निरंजना
द्ध जगत के ढुंगेश्वरी की महत्ता इस बात में निहित है कि यहीं
ी प्राप्ति हुई थी। यहाँ के एक पर्वतीय गुफा में देवी ढुंगेश्वरी
राधना की जाती है।

भरारी स्थान

इमामगंज मुख्य मार्ग के किनारे है। यहाँ आकर लोग मन्नतें
चढ़ाते हैं। चैत नवमी दशहरा के अवसर पर यहाँ विशेष भीड़
सकरे की बलि देते हैं और उसे ही प्रसाद के रूप में ग्रहण करते ह

सिंगरा स्थान

योनि पर्वत श्रृंखला से सम्बद्ध धेनु तीर्थ के पास में गया नगर
पर पुलिस लाइन क्षेत्र में है। महाभारत के अनुसार सवत्सा
विहन है, वही धेनु तीर्थ है जहाँ सिंगरा नामक मठ का निर्माण
त वर्ष श्रावण मास में मेला लगता था। आज भी यहाँ पाषाण
, श्री विश्वकर्मा मंदिर, प्राचीन ठाकुरबाड़ी, यज्ञशाला व पुराने
दर्शन किये जा सकते हैं।

धर्मारण्य

धर्मारण्य बोधगया महाबोधि मंदिर से 6 कि०म
दो-नद की इस ऐतिहासिक भूमि में महाभारत काल में प
था। यहाँ का देवालय, रहटकूप और प्राचीन स्मारक व
दूर-दूर से लोग आते हैं।

कपिलधारा

गया जिला मुख्यालय से 5 कि०मी० दूर ब्रह्मयो
साधना स्थली विराजमान है। महर्षि कपिल की साधन
कपिलधारा एक मनोरम देवस्थल है जहाँ आज भी पाँच
स्थान, गुफा, साधनाकक्ष व प्राचीन ब्रह्मस्थान के दर्शन
यह स्थान लंगटा बाबा की साधना स्थली रही है। इस पंथ

बगला स्थान मंदिर

मी० दूर रामधनपुर मुहल्ले में अवस्थित यह मंदिर गया नगर के
ाँ प्रत्येक गुरुवार मंगलवार व साल के दोनों नवरात्र में दूर-दूर
यहाँ माताजी, शिवशंकर, भैरव, हनुमान, वृक्षदेव, आदि के

कंकाली मंदिर, बेलागंज

ह प्रसिद्ध मंदिर बेलागंज प्रखंड मुख्यालय से ½ कि०मी०
०मी० दूरी पर है। माँ का महाभारत कालीन यह स्थल एक
दूर तक प्रसिद्ध है। यहाँ माँ काली का अद्वितीय विग्रह दर्शनीय
जा वाणासुर की पुत्री उषा को जाता है। इस मंदिर परिसर में
के साथ पंच शिव मंदिर, श्री भैरव स्थान, ब्रह्मस्थान, हनुमान
ाल सरोवर दर्शनीय है।

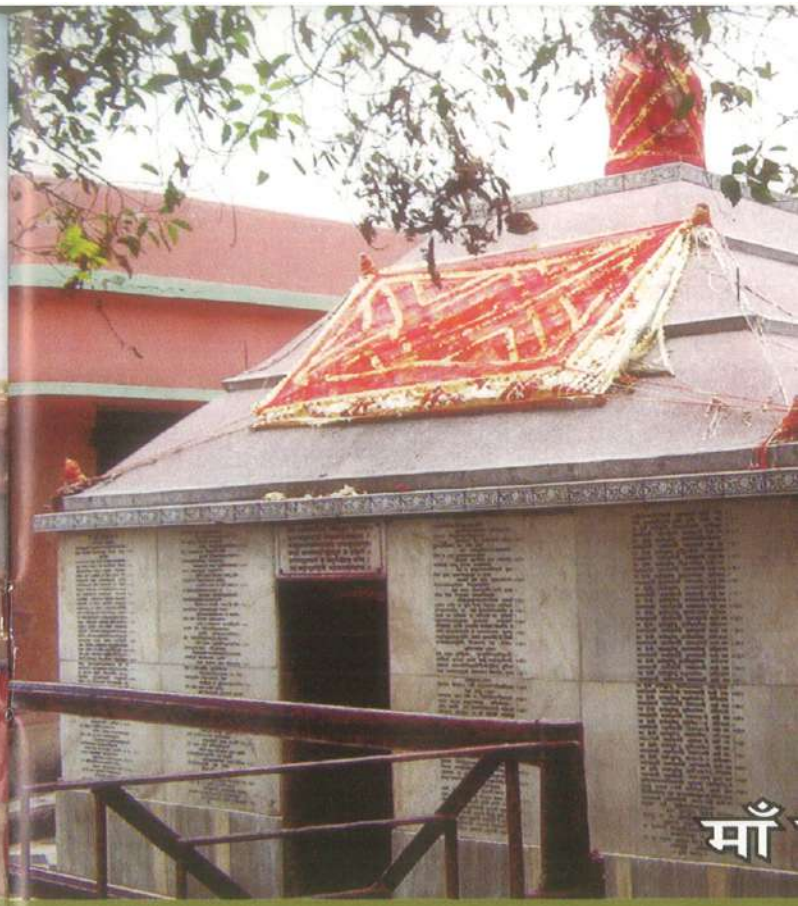

गया श्मशान

गया रेलवे स्टेशन से 05 कि०मी० दक्षिण पूरब
मंदिर से दक्षिण गया श्मशान नीचे के ढलान पर स्थित है
में गया श्मशान की गणना प्रधान जाग्रत श्मशान में की जा
यह है कि यह श्मशान वैष्णव प्रकृति का है। यहाँ
भैरव-भैरवी आदि तांत्रिक मूर्त्तशिल्पों को सहज ही देखा

माता तारा तीर्थ व

प्रखण्ड मुख्यालय टिकारी से 11 कि०मी० उ
केसपा गाँव के बाहरी छोर पर मुख्य प्रवेश मार्ग के किना
गाँव का संबंध कश्यप ऋषि से है जहाँ प्राच्य काल में उ
आज यहाँ माँ तारा की काले पत्थर की बनी मानवाकार मू
केसपा मूर्तशिल्प सम्पन्न गाँव है जहाँ आज भी कितने ही

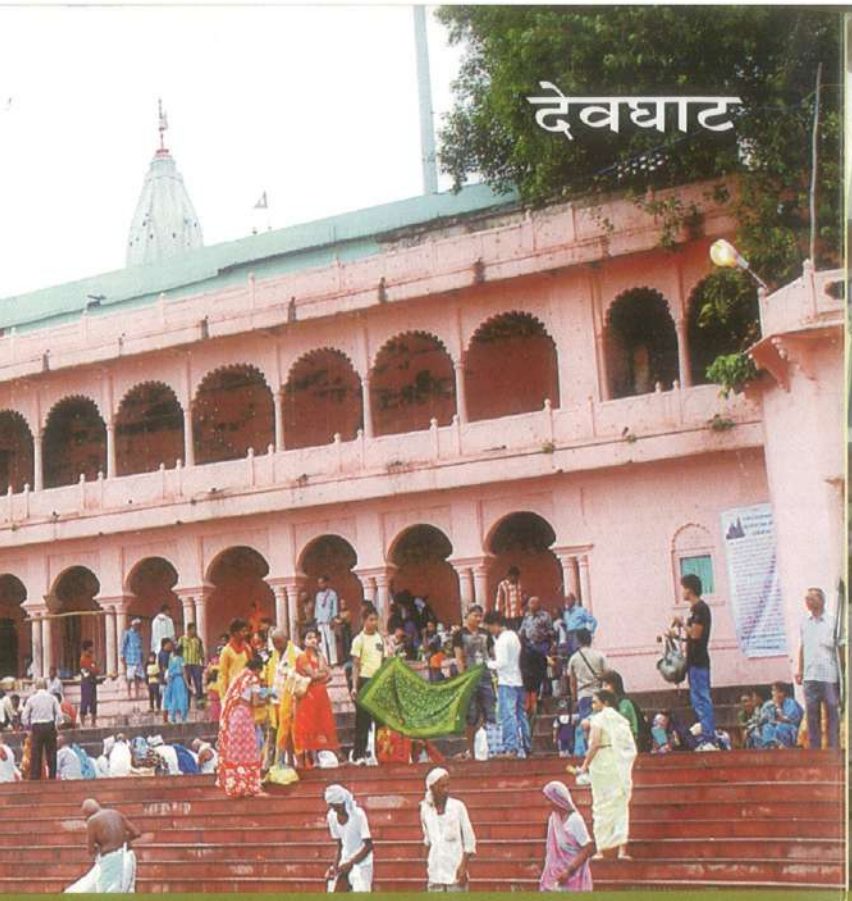

चेश्वर महादेव मंदिर

त्तर-पश्चिम कोण पर बसे कोंच प्रखण्ड मुख्यालय के ठीक क मंदिर अवस्थित है। इस मंदिर के निर्माण शैली में महाबोधि के सूर्य मंदिर की कलाकृति का मिश्रित प्रयोग दर्शनीय है। ग द्वारा संरक्षित इस मंदिर में शिव की पूजा होती है। मंदिर के ा है। यहाँ अन्यान्य कलाकृतियों के अलावे उत्कृष्ट दशावतार

ोवार का शिव मंदिर

ुख्यालय से लगभग 6 कि०मी० दूर चोवार गाँव में स्थित है। दिरों से एक इस मंदिर की सबसे बड़ी खासियत यह है कि यहाँ ल शिवजटा में समाहित हो जाता है। वह जल कहीं बाहर नहीं ीन महत्व के और कई मूर्त्त-शिल्प दर्शनीय हैं।

जामा मस्जि

गया की 'जामा मस्जिद' राज्य की सबसे बड़ी मामले में राज्य में अव्वल है। इसका निर्माण मुजफ्फरप सौ वर्ष पूर्व कराया गया। गया चौक टावर से उत्तर अधिक भूमि में इसका निर्माण पंजाब निवासी व मस्जिद देखरेख में हुआ था। इमाम जिस स्थान पर खड़े होक काजी फरजन्द अहमद द्वारा, मस्जिद के उत्तर बने हॉज द द्वारा तथा आगे की दुकाने अब्दुल रउफ मिल्की द्वारा कर

छत्ता मस्जि

गया शहर के जी०बी० रोड के पश्चिमी किनारे प लगभग 12 फीट ऊँचाई पर निर्मित होने के कारण यह इ लगभग 150 वर्ष पूर्व एक मुसलमान मुंसिफ ने अपनी क फीट लम्बा तथा 46 फीट चौड़ा छत्ता मस्जिद में करीब 500

शाही मस्जिद

ारा लगभग 400 वर्ष पूर्व 1026 हिजरी में निर्मित नादरागंज
ी के निजामुद्दीन औलिया के शागिर्द हजरत मुराद अली तथा
वशेष रखे गये हैं। फल्गु नदी के तट पर स्थित शाही मस्जिद
है। शाही ढंग से निर्मित इस मजिस्द की दीवारें और इसमें
दलाता है। धरातल से लगभग 8 फीट की ऊँचाई पर निर्मित
लिखी गई पवित्र कुरान की आयत आज भी नक्श है।

मुन्नी मस्जिद

न्नी बानो द्वारा दान में दी गई भूमि पर अवस्थित इस मस्जिद
में डाली गई जो 1966 ई० में सम्पूर्ण स्वरूप में बनकर तैयार
निर्मित मुन्नी मस्जिद का मूल नाम मोईन मस्जिद हैं ।

करीमगंज मस्जिद

नी आबादी के बीच करीब दो सौ वर्ष पूर्व निर्मित करीमगंज
यी गई है। 3600 वर्गफीट में फैले मस्जिद के अहाते में ही
दबा पड़ा है। इस मस्जिद में एकसाथ लगभग 800 नमाजियों
नायी गई है।

शिया मस्जिद

कमात्र शिया मस्जिद है जो शिया समुदाय की है तथा उसके
वर्ष पूर्व निर्मित इस मस्जिद की अपनी रीति-नीति और
कहना है कि शिया समुदाय के लोग जुमा, जुमेरात और अन्य
ाकर नमाज अदा करते हैं।

चिश्तिया मोनामिया

हुसैन फानी ने 1262 हिजरी में चिश्तिया मोनामिया खानकाह
निर्माण निजी भूमि पर व्यक्तिगत खर्च से नौआगढ़ी मुहल्ला
ब के दाढ़ी के बाल, ख्वाजा गरीब नवाज का पहनावा, हजरत
हब के मुए मुबारक, ख्वाजा नसीरूद्दीन चिराग देहलवी की
खदुम जलालुद्दीन की तस्वीर सहित कई ताबरूकात सुरक्षित
जियारत होती है।

गया का करबला

गया-पटना सड़क मार्ग एवं फल्गु के तट पर तथा रामशिला पहाड़ की तराई में स्थित गया का करबला साम्प्रदायिक सौहार्द्र की निशानी है। बताया जाता है कि राय हरिहर प्रसाद ने अपनी पत्नी जीनत बेगम के सपनों को मूर्त रूप देने को ईराक पहुँच गये। ईराक स्थित करबला में जहाँ, हजरत ईमाम हसन और इमाम हुसैन की शहादत से करबला की मिट्टी की लाल हो गई थी, वहाँ से खून आलुदा मिट्टी को गया करबला में डालकर ईमामबाड़ा का ईमारत बन
करबला ईराक के बाद दूसरा करबला है जहाँ, ईमाम ह
खून से सनी मिट्टी दबी हुई है। आज भी प्रत्येक वर्ष हजा
मुहर्रम में पूरे महीने अपनी मन्नते मांगते हैं और पूरा होने प

बीथोशरीफ दर

शहर से 5 कि
यहाँ महान सू
अलैहजी क
उनके इन्तका
आनेवालों क
लगभग पाँच
साहब और उ
की मजार है।
माँगने आते हैं

शाह मीर शाह का मज़ार

गया जिला मुख्यालय से 4 कि०मी० दूरी पर अव
मज़ार गली के अन्दर है जो गेवाल बिगहा विष्णुपद मार्ग
एक शाह मीर बाबा के नाम पर ही इस क्षेत्र को शाह मी
शताब्दी में बाबा का स्थान लाइलाजियों के इलाज का प्रध

दिगम्बर जैन मन्दिर

स काफी पुराना है। वर्तमान समाज के लोगों के वंशज करीब
ा आकर पुरानी गली (बहुआर चौरा) में बसे तथा अपनी
मंदिर का निर्माण कराया। वर्तमान के बहुआर चौरा के जैन
हुए जीर्णोद्धार के बाद का है।
ाव हुआ तब इधर भी जैन समाज के लोग बसने लगे तथा जैन
ट के पास कराया। इसका निर्माण करीब 100 वर्ष पूर्व हुआ

बैपटिस्ट चर्च

न से 2 कि०मी० दूरी पर गाँधी मैदान क्षेत्र में है। गया के पुराने
सकी बनावट इसाई कला संस्कृति के अनुसार है। यहाँ हरेक
हैं।

श्री कृष्ण द्वारि

गया जिला मुख्यालय से 4 कि०मी० दूरी पर प्रा
कृष्ण द्वारिका श्री विष्णुपद के ठीक बगल में स्थित है। ग
यह स्थल उत्तरपालकालीन है। यहाँ गर्भगृह में भगवान व
बीच विराजमान है, जो छत पर बना है। इस मंदिर के नीचे
महादेव' का स्थान है, जिनकी कृपा-दृष्टि से वैवाहिक अ

श्री भैरो स्था

गया जिला मुख्यालय से करीब 2 कि०मी० दू
पुरानी मार्ग पर अवस्थित गोदावरी मुहल्ले में है। गया ती
अष्टप्रधान भैरवतीर्थ में गण्य है, जहाँ युगों-युगों से श्री
कपाल भैरव (रुद्रकपाल) की पूजा होती है। इस मंदिर
भैरव जी के विविध रूपों का मूर्त्त-शिल्प दर्शनीय है। गया
यह मंदिर गुप्तकालीन मंदिर का विशिष्ट नमूना है जो द्वय

जंगमेश्वर और एकाद

गया जिला मुख्यालय से 3 कि०मी० दूरी पर अवस्थित
स्थित अशोक अतिथि निवास का निर्माण हुआ है। यहाँ
संगमबाड़ी क्षेत्र था जहाँ के इन शिवालयों का मध्यकाल
की कला शिल्पकारिता से प्रभावित यहाँ के मंदिरों में कि
बंगाल प्रांत के जानकार लोग खासकर श्री चैतन्य महा
अवश्य दर्शन-पूजन करने आते हैं।

उतरेन-पाली

उतरेन-पाली गया-कोंच मुख्य मार्ग पर गया
सड़क के दोनों ओर विद्यमान है। पाली एवं उतरेन गाँव मे
सुरक्षित हैं। उतरेन गाँव में सोमेश्वर महादेव का विशाल
अवस्थित विशाल टीला और पाली गाँव का विशाल प्रा
याद दिलाता है। मध्ययुग में यह क्षेत्र टिकारी राज के अन्त

बिन्दा

बाराचट्टी प्रखंड मुख्यालय से 10 कि०मी० उत्तर-पश्चिम
स्थित है। मगध के प्राचीन कोल राजवंश के राजाओं के
न्दा गाँव का संबंध वृन्दा से जोड़ा जाता है। गुलसकरी नदी के
, जो मगध के मध्यकालीन शिवपूजन स्थलों में से एक है।

धोबनी पहाड़

यालय इमामगंज से 6 कि०मी० पश्चिम इमामगंज-डुमरिया
० उत्तर की ओर अवस्थित है। यह पहाड़ प्राचीन काल से
के ऊपरी हिस्से पर भगवान बुद्ध की विशाल प्रतिमा थी, जो
कारणों से गया प्रशासन को सौंप दिया गया। बुद्ध से जुड़ा
बुद्धनी पहाड़ी) के नाम से जाना जाता था, जिसे अब विकृत
हैं। इस पहाड़ में ही ½ कि०मी० की दूरी पर प्राकृतिक
हैं। वहाँ पर वीर गौरैया नामक देव स्थल है। यहाँ का पानी

नौकाडीह गढ़

र प्रखंड मुख्यालय से 3 कि०मी० पश्चिम गया-इमामगंज
उत्तर अवस्थित है। यह कोल राजाओं का गढ़ माना जाता है,
एक हेक्टेयर भू-भाग में फैला है। यहाँ खुदाई पर मुर्तियों के
लते हैं। इस जमीन पर चोट करने पर एक अलग तरह की
उत्तर की ओर पहाड़ की एक चट्टान पर प्राचीन लिपि में कुछ
हीं जा सका है। खुदाई वाले पत्थर पर पानी डालने से इसका
ये हो जाता है।

डबूर

यह स्थान हावड़ा-नई दिल्ली ग्रैंड कार्ड लाईन
कि०मी० दूरी पर अवस्थित इस्माइलपुर रेलवे स्टेशन से
गुरारु प्रखंड में अवस्थित जिले के इस पुराने गाँव से उत
आज भी इस गाँव में गढ़, पुराने दो मंदिर, पुरावशेषों को स
तालाब व नवयुग में निर्मित चार देवालयों के दर्शन किये ज
72 पुरों में की जाती है। पालकालीन समृद्ध मूर्त्त शिल्प
जाता है।

काबरगढ़

कोंच प्रखण्ड मुख्यालय से 10 कि०मी० दक्षिण
कि०मी० दूरी पर कावरगढ़ स्थित है। गया जले के पुराने
गढ़ों में एक कॉवर का यह गढ़ राजा बाबन सुब्बा से सम्
दरवाजा, 52 आँगन और 52 खिड़की से शोभित था। आज
वस्तुओं की प्राप्ति होते रहती है। इस गढ़ के नीचे एक विशे

आकाश गंगा

गया जिला मुख्यालय से 2 कि०मी० दूरी पर अव
के पीछे गोदावरी पहाड़ पर बनी सीढ़ी से होकर इस पर्वत
गया तीर्थ के प्राचीन साधना स्थली में गण्य आकाश गंगा
को दीक्षा लाभ की प्राप्ति हुई जिन्हें साधकजगत में 'जटि
यहाँ हरेक वर्ष 25 दिसम्बर को 'दीक्षा-शरण उत्सव' म
भक्त भाग लेते हैं। आज भी इस स्थल पर आकाशगंगा
मंदिर, शिव मंदिर, विष्णुकाली मंदिर, बाबा का पूजन स्थ
गुफा का दर्शन किया जा सकता है।

म्मी की सिंह वाहिनी

य में स्थित नीम्मी फतेहपुर-वजीरगंज मार्ग पर अवस्थित माँ दर माँ का मंदिर अवस्थित है। ढाढ़र नदी के किनारे विराजमान ुराने टीले के निचले ढलान पर बने इस मंदिर में माता जी दो-दो ा जी की अद्‌भुत पाषाण प्रतिमा जिस सिंह पर सवार है, उसके इसके अलावे अन्य प्राच्य पुरावशेष भी दर्शनीय हैं।

जमकारण्य

या-शेरघाटी भाया चेरकी मार्ग पर बसा विशुनगंज से 1 और जमुने नदी के संगम पर जमकारण्य तीर्थ विराजमान है। धना-आराधना की पौराणिक स्थली के रूप में चर्चित है, जहाँ को विशाल मेला लगा करता है। इस स्थल का संबंध जम्भक प्राप्ति हेतु मनौती मांगने की परम्परा है जिसकी पूर्णता प्राप्त लोग जरूर आते हैं। यहाँ के प्रधान देवालय के मध्य एक ि जम्कारणी देवी का अंश बताया जाता है।

सरस्वती तीथ

सरस्वती तीर्थ बोधगया महाबोधि मंदिर से 4 अदृश्य सरस्वती के संगम पर बसा है। गया तीर्थ के प्र सरस्वती तीर्थ में माता सरस्वती का मंदिर अपनी महि सोमवारी अमावस्या और बसंत पंचमी के अवसर पर विश

बाँके धाम

शेरघाटी अनुमंडल में बसा बाँकेधाम गया से स्टैंड के पास से पर्वत तक जाया जाता है जहाँ सालों भर भ क्षेत्र के नवयुग में उदित तीर्थधामों में बाँकेधाम का नाम उद्‌घाटित शिवलिंग के बाद भक्तों की कृपा से यह एक सूर्य मंदिर, देवी मंदिर, शिवमंदिर, प्राचीन मंदिर के स्त दर्शन किये जा सकते हैं। जिले में मानव बसाव का यह प्र

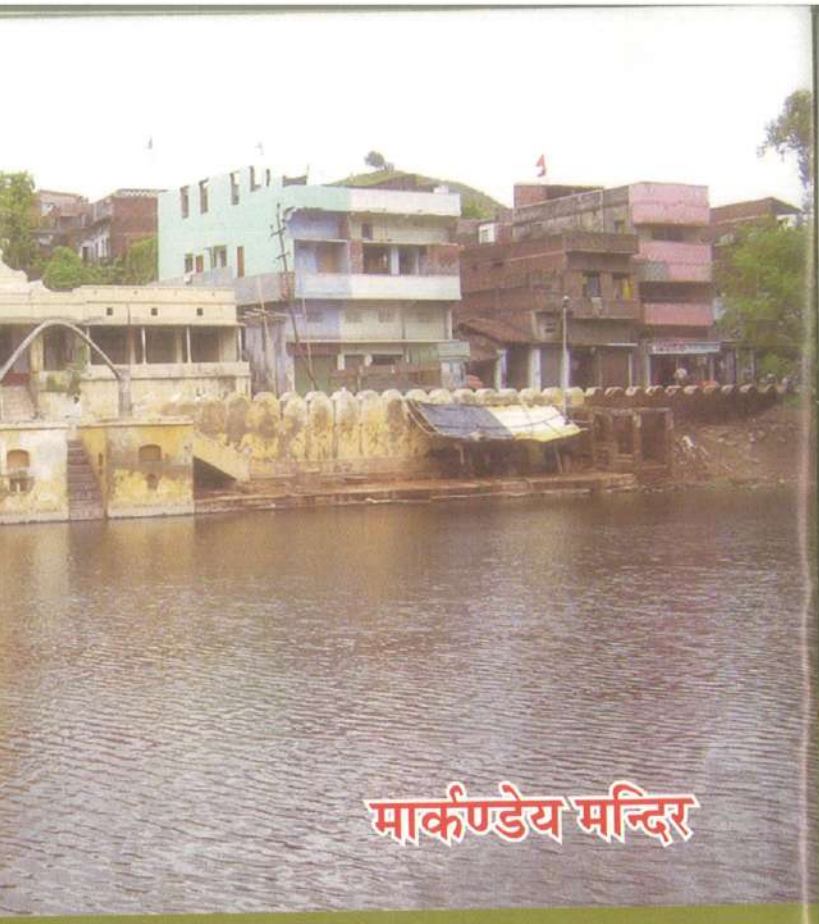

मार्कण्डेय मन्दिर

आ अभ्यारण्य किला

बाराचट्टी से 6 कि०मी० पूरब शेरशाह सूरी मार्ग से दक्षिण लुआ अभ्यारण किला टिकारी महाराज का शिकारगाह के े राजा शिकार करने के बाद अपने लाव-लश्कर के साथ आज भी यहाँ विशाल तीन मंजिले किले के साथ-साथ रसोईघर, स्नानघर, विशाल कुँआ, जलमीनार, वाच टावर, े जा सकते हैं।

तिलैया

स्थित प्रखंड मुख्यालय बाराचट्टी से करीब 6 कि०मी० है। गया के दक्षिण भाग में स्थित तिलैया कला में अवस्थित प्रसिद्ध है। यहाँ की देवी मूर्ति विलक्षण गुणों से सम्पन्न है, पहर में युवा रूप में और संध्याकाल में वृद्धा रूप में दृष्टिगत मुगलकालीन है। इसका संबंध बोधगया मठ परम्परा से भी

भूरहा

निर्मल भूगर्भ जलधारा भूरहा गुरुआ से 3 कि०मी तप, साधना व यज्ञ स्थली के रूप में भूरहा की ख्याति आगमन हुआ था, यही कारण है कि यहाँ हिन्दू व बौद्ध धम पास दुब्बा नाम का पुराना गाँव है, जहाँ एक प्राचीन गढ़ बौद्ध कला-कृतियाँ मिली हैं। कभी गया तीर्थ के 365 वेदि गयी है, जहाँ आज भी श्राद्ध-पिण्डदान के कार्य सम्पन्न बैसाख सतुआनी पर्व अर्थात मेष-संक्राति और कार्तिक करता है।

बैजूधाम

मोरहर नदी के किनारे मरहक पहाड़ी पर स्थित बै 4 कि०मी० पूरब और गया-शेरघाटी भाया चेरकी रोड सि स्थित है। यहाँ मगध का नवीनतम शैव तीर्थ है, जहाँ के शिखर पर अचानक ही प्रकट हुआ। यह पूरा पर्वत इतिहा भी पाषाण सीढ़ी, पाषाण-खण्डों पर अंकित शैलचित्र एवं

चिलोरगढ़

चिलोरगढ़ गुरुआ प्रखंड मुख्यालय से 3 कि०मी है। मगध के विशालतम गढ़ों में एक चिलोर का यह गढ़ क के अनुसार इस स्थल का नामकरण चील पक्षी के बसे प्राकृतिक रक्षक थे। जनकथाओं में चर्चा है कि यहाँ क मंजिला था। इसके अवशेष आज भी देखे जा सकते हैं। मनके, मृदभांड व देव-विग्रह के अंशावशेषों की प्राप्ति य

श्रृंगाही पर्वत

प्रखंड मुख्यालय से 5 कि०मी० पश्चिम इमामगंज-गया
ी पर्वत श्रृंगि ऋषि की तप:स्थली के रूप में जाना जाता है।
है। पर्वत की चोटी पर शिवमंदिर है। किंबदंती यह है कि
दी वाण चलाकर भक्त श्रवण कुमार की जान ली थी। पर्वत
की आकृति है, जिसे लोग राजा दशरथ के पैर का निशान
ी पहाड़ के नाम से जानते हैं। आजादी की लड़ाई के समय
के दीवानों के छिपने की जगह थी। अंग्रेजों की फौज ने एक
र भी जगलाल महतो के नेतृत्व में क्रांतिकारी चकमा दे कर

श्रवणा दह

खंड मुख्यालय से 4 कि०मी० दक्षिण मोरहर नदी के किनारे
श्रवणा दह के विषय में यह किंवदंती प्रसिद्ध है कि श्रवण
ी तीर्थाटन के क्रम में मोनया-पननिया गाँव के पास पेड़ के
गये थे। इसी बीच राजा दशरथ के शब्दभेदी वाण से श्रवण
ाद में दशरथ के द्वारा श्रवण कुमार के प्यासे माता-पिता को
आग्रह किया गया था, इसी कारण इस जगह का नाम पहले
ड़ा। कहा यह भी जाता है कि राजा दशरथ ने श्रृंगाही पर्वत से
गली पशु-पक्षियों के लिए भी मुख्य जल विहार था, वहाँ

शेरशाह का जेल

का जेल गोला बाजार से पश्चिम मोरहर नदी के किनारे स्थित
ल मोरहर नदी के किनारे है, जिसका अवशेष भी मौजूद है।
ाटी क्षेत्रीय मुख्यालय व प्रशासनिक केन्द्र था। इस जेल के
ब के अवशेष आज भी विद्यमान हैं।

सगहा पहाड़

सगहा पहाड़ शेरघाटी प्रखंड मुख्यालय से 7 कि
यह गया जिले का एक प्रसिद्ध पहाड़ है, जिसके नीचे प्राक
प्राकृतिक गुफा है, जिसमें प्राचीन शिवलिंग स्थापित है।
लगता है। इस स्थान के नामकरण के संबंध में जानकारी
पहाड़ गेंधारी साग से भरा रहता था, जिसे तोड़ कर उसका
साग के कारण इस पहाड़ का नाम 'सगहा पहाड़' पड़ा।
और पन्द्रह फीट वर्गाकार ईंट निर्मित मस्तूल है, जो अनुमान

कोंची

कोंची गाँव गुरारु रेलवे स्टेशन से 4 कि०मी०
अवस्थित है। यह गया जिले का प्राचीन गाँव है, जहाँ काले
मूर्ति यहाँ के मंदिर में है। यह स्थल पालकाल के बाद का
पुराने मंदिर का ध्वंसावशेष एवं कुँआ देखे जा सकते हैं।

मण्डा पहाड़

बौद्ध विहार स्थल मण्डा पहाड़ गुरुआ प्रखण्ड मु
जी०टी० रोड स्थित आमस प्रखण्ड मुख्यालय से 4 कि०म
एवं बौद्ध ठहराव स्थल रहा। मेजर किट्टो ने इस पहाड़
पाषाण खण्ड निर्मित विहार देखा था। इस पूरे शिखर पर
का अंकन है। इस पर्वत के शिखर पर दो गुफाएँ मौजूद हैं,
इसका प्राचीन नाम मण्डिका पर्वत है। लोक कथाओं में
मिश्र से जोड़ा जाता है।

गुनेरी

बौद्ध स्थल गुनेरी गुरुआ प्रखण्ड मुख्यालय से 7
स्थित आमस प्रखण्ड मुख्यालय से 6 कि०मी० उत्तर है।
तथागत ने इस जगह पर बौद्ध धर्म की चर्चा और रात्रि विश्र
बुद्ध की विभिन्न मुद्राओं की मूर्तियाँ प्राप्त हुई थीं। गुनेरी
जिसके चारों ओर बुद्ध की मूर्तियाँ बिखरी हैं।

पत्थरकट्टी

मुख्यालय से 7 कि०मी० उत्तर-पश्चिम टेउसा-सरबहदा रोड
कट्टी की महत्ता इस बात में है कि आधुनिक काल में श्री
पत्थरों का प्रयोग किया गया है। आज भी गया जिले में पत्थर
का प्रयोग करते हैं। इस क्षेत्र में राजस्थान के गौड़ मूर्तिकारों ने
ाज भी यहाँ ढेरों कारीगर मूर्ति निर्माण कार्य में लगे हैं।

रौनागढ़

वे लाईन स्थित चाकन्द रेलवे स्टेशन से उत्तर-पूरब 3½
जिला का पुराना गाँव है, जिसके ठीक बीचोबीच एक विशाल
है। लगभग 20-30 फीट ऊँचे इस टीले की खुदाई के दौरान
त होती रही हैं। इस गाँव में मुगलकालीन अवशेषों की भरमार
ना तालाब, पुरानी मस्जिद प्रमुख हैं, जो आसपास के लोगों के

जेठियन

ुख्यालय से 11 कि०मी० दक्षिण-पूर्व पर्वत की गोद में स्थित
येष्ठिवन ही आज का जेठियन है। यहाँ ज्येष्ठि मधु (मुलहठी)
से परिवृत विशाल वन था जहाँ तथागत का भी ठहराव हुआ
यात्री ह्वेनसांग ने की। आज भी यहाँ ऑल यंग बुद्धिस्ट
न बुद्ध के मंदिर, चैत्य और विहार दर्शनीय हैं। यहाँ गया जिले
लय एवं पहला नवोदय विद्यालय अवस्थित है।

मखपा

से 3 कि०मी० उत्तर-पूरब टिकारी-केसपा रोड के किनारे
लीन मंदिरों ने एक मखपा गाँव में बराह देवता का मंदिर तालाब
स्थित है। इस मंदिर में प्राचीन महत्व के मूर्तिशिल्पों में विष्णु,
ली, भैरव एवं भैरवी प्रमुख हैं।

फतेहपुर का शिव

फतेहपुर गया जिला मुख्यालय से 15 कि०मी०
अवस्थित है, जो टिकारी से 5 कि०मी० पूरब है। गया क्षे
मंदिर टिकारी महाराज के शैव भक्ति का प्रतिफल है। ि
तालाब है, जिसके बीचोबीच लकड़ी का लट्ठा गड़ा है।
यहाँ मेला लगता है।

मैगरा का शिव म

मैगरा इमामगंज से 10 कि०मी० पश्चिम इमामग
प्रखंड में अवस्थित है। सुरहर नदी के किनारे बसा मैगर
प्रसिद्ध है, जहाँ आज भी बुढ़वा महादेव का दूर-दूर तक
वल्लभ शास्त्री की जन्मस्थली मैगरा ही है।

कोठी

कोठी प्रखंड मुख्यालय इमामगंज से 12 कि०मी
मोरहर नदी के किनारे अवस्थित है। कोठी प्राचीनकाल
साम्राज्य की राजधानी थी, जहाँ पर मिट्टी से बने हुए गढ़
इसीलिए इस स्थान का नाम कोठी पड़ा था। अभी खुदाई
किये जा सकते हैं। कालांतर में यही कोठी क्षेत्र रुहेला
ग्रामीण इलाकों में इन रुहेला पठानों का प्रभुत्व है।

देवकली

गुरुआ प्रखंड मुख्यालय से 6कि०मी० उत्तर गुरा
से 2 कि०मी० पूरब की दूरी पर बसा है। मगध के बहत्तर
पूरा संपन्न है। यहाँ के पूजित प्राच्य शिवलिंग की सबसे
पत्थर का बना ढक्कननुमा आकृति का होना है। इसके अ
के अवशेष, देव-विग्रह, बौद्ध फलक, अलंकृत स्तंभ व
देखी जा सकती हैं।

लखैपुर गढ़

खंड मुख्यालय से पूरब मुहाने नदी के ठीक उस पार 2
हरी छोर पर अवस्थित लखैपुर गढ़ आज भी शताधिक फीट
ंधित गढ़ है, जहाँ की रानी लखिया (लखवा) के नाम पर ही
मुहाने नदी के तट पर गढ़ के ठीक नीचे 'जलेश्वर महादेव'
र देवी मंदिर, प्राचीन ठाकुरबाड़ी और संत-महात्माओं के

दरबार

स्थित प्रखंड मुख्यालय बाराचट्टी से 6 कि०मी०
। बोधगया मठ के दक्षिण खण्ड के क्षेत्रों में प्रशासनिक केन्द्र
एक तीन मंजिला मठ था, जिसके अवशेष आज भी देखे जा
क शिवमंदिर है, जो करीब 300 वर्ष प्राचीन है। बोधगया मठ
गाँव का नामकरण दरबार हुआ।

अमारुत

से 4 कि०मी० दक्षिण और शेरघाटी अनुमंडल मुख्यालय से
गया-चतरा सड़क पथ पर यह गाँव अवस्थित है। अमारुत
एकड़ में फैला 11 फीट ऊँचा एक गढ़ है जो कोल राजा के
सके पश्चिम में एक तालाब है जहाँ साल के दोनों छठ पर्व में
उपस्थिति से मेला लग जाता है। गाँव के देवालय भी यहाँ की

सैफगंज

ालय से 2 कि०मी० पूरब और शेरघाटी अनुमंडल मुख्यालय
में यह गाँव अवस्थित है। गया जिला के पुराने गाँव सैफगंज में
प्रशासनिक केन्द्र, राजप्रसाद व कचहरी अवस्थित थे। आज
ढ़ देखा जा सकता है, जहाँ से विविध प्रकार के भग्नावशेष के
खण्डित अवशेष प्राप्त हुए हैं। इसके साथ ही रिंगवेल
भी यहाँ देखा जा सकता है।

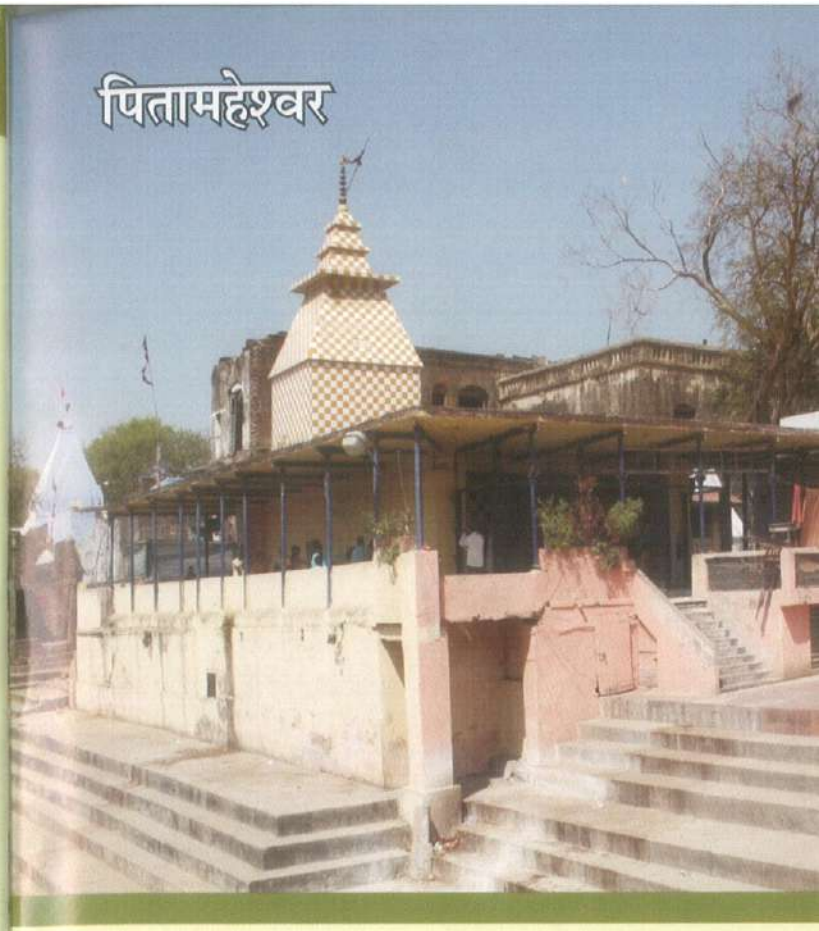

चण्डीस्थान

जी०टी० रोड पर आमस प्रखंड मुख्यालय से पूर
के देवी पूजन के पुराने केन्द्रों में एक चण्डीस्थान पहाड़ी
साल के दोनों नवरात्र और किसी भी पर्व त्योहार में विश
बौद्ध व हिन्दू धर्म का समन्वय स्थल है।

सरवां कला

प्रखंड मुख्यालय बाराचट्टी से 7 कि०मी० जी०टी
2 किलोमीटर उत्तर तथा अनुमंडल कार्यालय शेरघाटी से
जिले के पुराने बाजारों में एक सरवां बाजार में गुलसकरी
करीब तीन एकड़ भू-भाग में एक गढ़ है जिसके एक तर
तालाब है। कोल राजा के गढ़ के नाम के नाम से प्रसिद्ध
अवशेष व कई मूर्तियों की प्राप्ति हुई है। लोक कथाओं
श्रवण कुमार से जोड़ा जाता है।

ाँके बाजार) का बौद्ध-स्तूप

ख्यालय से शेरघाटी-इमामगंज पथ के बीच बाँके बाजार
कि०मी० पर थाड़ी पहाड़ी पर स्थित है।

मरहक पहाड़ी

से 4 कि०मी० पूर्व की ओर मोरहर नदी के पूर्वी तट पर और
तिहासिक पहाड़ी अवस्थित है। यहाँ कई देवी-देवताओं की

भगवती

थत प्रखंड मुख्यालय बाराचट्टी से 8 कि०मी० उत्तर-पश्चिम
का नाम माँ भगवती के नाम पर है, जहाँ कभी देवी के सभी नौ
इनमें से अब केवल तीन मूर्तियाँ ही शेष बची हैं। यहीं पर दबे
नों पाषाण मूर्तियों के खण्डित अवशेष देखे जा सकते हैं।

◆

ti Vehicles Pvt. Ltd.
LAZA, S. P. ROAD, GAYA - 823 001.
Sales) 0631 - 2220375, 9204796956 (Service) 9504138547 (Spare)

Heartiest welcome to a
Pitrapaksha Me

ओ.बी.सी.

ORIENTAL BANK OF
Where Every Individual
(A GOVT. OF INDIA UNDER
"RAMANUJ BHAWAN", 371 A.P. COL
Tele. : 0631 - 222094

स्वच्छ बिहार स्वस्थ बिहार सुदृढ़ भारत

''सर्वे-सन्तु निरामया''

श्री अश्विनी कुमार चौबे
माननीय स्वास्थ्य मंत्री
बिहार सरकार

श्री नीतीश कुमार
माननीय मुख्यमंत्री, बिहार

श्री सुशील कुमार मोदी
माननीय उप-मुख्यमंत्री
बिहार

मस्तिष्क ज्वर
में ध्यान देनेवाली बातें

आपातकाल की स्थिति में एम्बुलेंस हेतु टॉल फ्री नं.102 डायल करें।

मस्तिष्क ज्वर के लक्षण :-

तेज बुखार आना।
चमकी अथवा पूरे शरीर या किसी खास अंग में ऐंठन होना।
दाँत पर दाँत लगना।
बच्चे का सुस्त होना/बेहोश होना।
चिउँटी काटने पर शरीर में कोई हरकत नहीं होना।
उपरोक्त लक्षणों में से कोई भी हो तो अविलम्ब निकटतम प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र/सदर अस्पताल/ मेडिकल कॉलेज अस्पताल में बच्चों को ईलाज हेतु लावें।

मस्तिष्क ज्वर से बचाव के उपाय :-

धूप से बचें।
तेज बुखार होने पर पूरे शरीर को ताजे पानी से दो–तीन बार पोछें तथा आशा दीदी/ए०एन०एम० से सम्पर्क करें।
साफ पानी में ओ०एस० घोलकर पिलायें।
बेहोशी/मिर्गी की अवस्था में बच्चे को हवादार स्थान पर रखें, मुँह से कुछ भी न दें तथा नाक बंद न करें।
सोते समय सदैव मच्छरदानी का प्रयोग करें।
अपने घर के आस–पास गंदा पानी तथा गंदगी को जमा नहीं होने दें।
बगीचे में गिरे जूठे फल न खायें।

मस्तिष्क ज्वर के ईलाज की सुविधा
महावीर वात्सल्य अस्पताल, एल.सी.टी. घाट, पटना में भी उपलब्ध है।

नियंत्रण कक्ष

स्वास्थ विभाग : 0612-2217608, 2215505

पटना : जिला एपिडिमोलॉजिस्ट- 9471002879, 0612-2677113, पटना मेडिकल कॉलेज अस्पताल- 9835236987, नालन्दा मेडिकल कॉलेज अस्पताल- 0612-2630961, **गया :** 0631-2220303, 9470003263, अनुग्रह नारायण मेडिकल कॉलेज अस्पताल- 0631-3201810, **सीतामढ़ी :** जिला मलेरिया पदाधिकारी- 9470721951, 0622-6253007, **पूर्वी चम्पारण :** सिविल सर्जन- 9939967901, 9431257682, **मुजफ्फरपुर :** अपर मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी- 9470003495, श्री कृष्ण मेडिकल कॉलेज अस्पताल- 0612-2230321, 9470003487, **वैशाली :** सिविल सर्जन- 9470003807, 06224-260197, **सारण :** उपधीक्षक सदर अस्पताल- 06152-241481, 9470003711, **भोजपुर :** जिला मलेरिया पदाधिकारी- 9431452419, जिला प्रतिरक्षण पदाधिकारी- 9470003150, जिला एपिडिमोलॉजिस्ट- 9471002869, **नालन्दा:** जिला प्रतिरक्षण पदाधिकारी- 9470003503, 06112-230808, **नवादा :** जिला प्रतिरक्षण पदाधिकारी- 9470003531

स्वास्थ्य विभाग, बिहार सरकार राज्य स्वास्थ्य समिति, बिहार

Magadh Printers, Gaya # 9334034426